आरती श्री संतोषी माँ की

जय संतोषी माता, मैया जय संतोषी माता ।
अपने सेवक जन को सुख सम्पत्ति दाता ।। जय...
सुन्दर चीर सुनहरि, मां धारण कीन्हों ।
हीरा पन्ना दमके, तन श्रृंगार लीन्हों ।। जय...
गेरू लाल छटा छवि, बदन कमल सोहे ।
मन्द हंसत करुणामयी, त्रिभुवन मन मोहे ।। जय...
स्वर्ण सिंहासन बैठी, चंवर ढूरें प्यारे ।
धूप, दीप, मधुमेवा, भोग धरें न्यारे ।। जय...
गुड़ अरु चना परमप्रिय तामे संतोष कियो ।
संतोषी कहलाई, भक्तन वैभव दियो ।। जय...
शुक्रवार प्रिय मानत, आज दिवस सोही ।
भक्त मण्डली छाई, कथा सुनत मोही ।। जय...
मंदिर जगमग ज्योति, मंगल ध्वनि छाई ।
विनय करें हम बालक, चरनन सिर नाई ।। जय...
भक्ति भावमय पूजा, अंगीकृत कीजै ।
जो मन बसै हमारे, इच्छा फल दीजै ।। जय...
दुखी, दरिद्र, रोगी, संकट मुक्त किये ।
बहु धन-धान्य भरे घर, सुख सौभाग्य दिये ।। जय...
ध्यान धर्यो जिस जन ने, मनवांछित फल पायो ।
पूजा कथा श्रवण कर, घर आनन्द आयो ।। जय...
शरण गहे की लज्जा, राखियो जगदम्बे ।
संकट तू ही निवारे, दयामयी अम्बे ।। जय...
सन्तोषी मां की आरती, जो कोई नर गावे ।
ऋद्धि-सिद्धि, सुख-सम्पत्ति, जी भरकर पावे ।। जय...

विवरण

जो अपने भक्तों को सुख देने वाली हैं तथा ऐश्वर्यवान बनाने वाली हैं,

visit www.astrogyan.com for more aarthis, free indian astrology horoscope charts & predictions
all information © since 2000, Aks Infotech Pvt. Ltd., portal designed & developed by Pintograph Pvt. Ltd.

ऐसी संतोषी माता की जय हो । यह संतोषी माँ अत्यन्त ही सुनहरी चुनरी को धारण करने वाली हैं तथा हीरे एवं पन्ने से किया हुआ इनके बदन का श्रृंगार चमकता रहता है ।

गेरुवे रंग के लाल वस्त्र में इनके बदन की शोभा कमल के समान छवि बिखेरती है । माता संतोषी अपने धीमी मुस्कुराहट से सम्पूर्ण जग के मन को मोह लेती हैं । सोने के सिंहासन पर संतोषी माँ बैठी रहती हैं तथा चँवर डुलते रहते हैं,
धूप - दीप इनके पास जलते रहते हैं तथा तरह - तरह के मधुर मिष्ठान्न इनके आगे भोग लगाने के लिए धरे रहते हैं ।

गुड़ एवं चना संतोषी माता को बड़े ही प्रिय हैं एवं इन्होंने इसी से संतोष कर लिया जिससे इनका नाम संतोषी पड़ा । ये अपने भक्तों को परम सुख की अनुभूति कराती हैं । शुक्रवार इनका प्रिय दिन है । इस दिन को इनके भक्तों की मण्डली इकट्ठी होती है तथा इनकी कथा को सुनकर अपने मन को उत्साहित करती हैं ।

संतोषी माता का मन्दिर रोशनी से चकाचौंध हुआ रहता है तथा मंगल ध्वनि बजती रहती है । हम बालक सिर नवाकर आपसे प्रार्थना कर रहें हैं, हमारे भक्ति, प्रेम के भावों एवं हमारी पूजा-अर्चन को आप स्वीकार कीजिए तथा हमारे मन की इच्छा को पूर्ण कीजिए ।

आपने दुःखियों के दुःख दूर किये, दरिद्रों की दरिद्रता मिटाई तथा रोगियों को आरोग्य बनाया, इस तरह आपने सभी को संकट से मुक्त कर दिया एवं उनका घर धन - धान्य से भर कर उन्हें सुख एवं सौभाग्य प्रदान किया । जिसने भी
आपका तन - मन से ध्यान किया, पूजा की एवं आपकी कथा को सुना, वह अपने मन के अनुसार फल पाकर आनन्दपूर्वक अपने घर आया ।

अपने इस शरणागत की लज्जा को बचाइएगा तथा हमें संकट से उबारिएगा । संतोषी माता की आरती जो भी गाता है, वह धन - धान्य से परीपूर्ण हो जाता है।